Satwalekar, Shripad Damodar, 1867-
Vaidika vyākhyāna mālā
Vol. 2

वैदिक व्याख्यान माला - ग्यारवाँ व्याख्यान

# वेदोंका अध्ययन
## और
# अध्यापन

लेखक

पं. श्रीपाद दामोदर सातवळेकर

अध्यक्ष- स्वाध्याय-मण्डल, साहित्य वाचस्पति, गीतालङ्कार

CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE
VARANASI

मूल्य छः आने

ॐ

# वेदोंका अध्ययन और अध्यापन

## वेदका महत्त्व

भारत वर्षकी सभ्यता, संस्कृति और धर्ममर्यादा वेदके आधारपर खडी है यह सब जानते हैं। 'वेदोऽखिलो धर्ममूलं ( मनु० २।६ ) अखिल वेद धर्मका मूल है, यह स्मृतिका कथन सत्य है। तथा—

**या वेदबाह्याः स्मृतयः याश्च काश्च कुदृष्टयः।**
**सर्वास्ता निष्फला ज्ञेयास्तमोनिष्ठास्तु ताः स्मृताः॥**

मनु० १२।९६

'जो वेदबाह्य स्मृतियां हैं, वे सब कुदृष्टियां हैं, वे सब तमोगुणवाली हैं, इसलिये वे सबकी सब निरर्थक हैं।' इतना तीव्र निषेध वेदबाह्य स्मृतियोंका मनुने किया है। वेदवचनोंकी इतनी उपयोगिता है और वेदविरुद्ध आज्ञाकी इतनी निरर्थकता है, इसलिये "वेदोंका अध्ययन करना सब आर्योंका परमधर्म है।" क्योंकि इस वेदमें ही श्रेष्ठ मानवधर्म कहा है, देखिये—

**सेनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च।**
**सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति॥**

मनु० १२।१००

'सेनासंचालन, राज्यका प्रबंध, दण्डनीयको योग्य दण्ड देना, तथा सर्व लोकोंके अध्यक्ष होकर कार्य करना आदि सब कार्य वेदशास्त्र जाननेवाले विद्वान पुरुषोंके करनेके कार्य हैं।' अर्थात् वेदशास्त्र जाननेवाला पुरुष उत्तम सेनाका सर्वोत्कृष्ट संचालन कर सकता है, राज्यशासन करनेका कार्य भी वेदशास्त्रज्ञ कर सकता है। न्यायधीशका कार्य तथा सब जनताकी उन्नतिके कार्य वेदज्ञ कर सकता है।' मनुस्मृति लिखनेके समय वेदशास्त्र जाननेवालोंकी योग्यता यह होती थी। आज हम वेदवेत्ता पंडितोंमें यह योग्यता नहीं देखते हैं, यह भी सत्य है, इसका कारण यही है, कि वेदाध्ययनकी पद्धति आज वह नहीं रही, जो मनुस्मृतिके समय थी, अथवा जिस रीतिसे गुरुकुलोंमें वेदाध्ययन अति प्राचीन समयमें होता था, वह रीति जाननेवाला आज हमारे पास कोई नहीं है। तथापि वेद वही है, कि जो मनुस्मृतिके समय था। इस वेदमें अर्थात् वेदके मंत्रोंमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। पर इन वेदमंत्रोंसे जो बोध उस समय पढनेवालोंके हृदयमें प्रकाशित होता था, वह वैसा आज नहीं होता। इसलिये आज हम वेदज्ञ पंडितको सेनापति, राज्यशासनाधिकारी, न्यायालयका अधिकारी अथवा लोक कल्याणके नाना कार्योंकी निप्राणी करनेके कार्योंको करनेके लिये नहीं रख सकते। आजकी यह स्थिति है। यह विपरीत स्थिति क्यों हो गयी है, इसका विचार करना चाहिये—

## कण्ठस्थ वेद

प्राचीन कालमें ब्राह्मणोंको विशेषतः और द्विजोंको सामान्यतः वेद कण्ठस्थ करना पडता था। प्रायः चारों वेदोंके २२००० मंत्र हैं। प्रतिदिन २५ मंत्र भी कण्ठ किये तो ३ वर्षोंमें चारों वेदोंके मंत्र कण्ठस्थ हो जाते हैं। यह कोई कठिन कार्य नहीं है। आज कल महाराष्ट्रीय वैदिक ब्राह्मण ऋग्वेदको कण्ठ करते हैं। प्राचीन समयमें चारों वेदोंको कण्ठ करते थे। आज भी गुरुकुलमें गया ब्रह्मचारी ८ वे वर्ष वेद कण्ठ करने लगे और प्रतिदिन ५।१० मंत्र भी कण्ठ करे, तो ५।७ वर्षोंमें चारों वेद कण्ठस्थ हो सकते हैं। यह असंभव नहीं है। पर इस कार्यको करनेकी इच्छा आज किसीके हृदयमें नहीं है।

## पचास वार वेदपाठ

यदि सब वेद कण्ठ नहीं करना है, तो कमसे कम ५० वार वेदपाठ करना तो सरल बात है ना? पर यह भी आज

कल कोई नहीं करता। प्रतिघण्टा ५०० मंत्रोंका पाठ किया जा सकता है। इस हिसाबसे दो मासोंमें चारों वेदों-क एक वार पाठ होना असंभव नहीं है। एक वर्षमें छः वार और ४।५ वर्षोंमें २५।३० वार सहज ही से चारों वेदोंका पाठ होता है। जिनको वेदाक्षर पढनेका अभ्यास नहीं है, उनके लिये प्रथम देड दो गुना समय लगेगा, पर ३।४ वार पाठ होनेपर पूर्वोक्त समयमें वेदपाठ होना सरल बात है। दस वार पाठ होनेसे छोटे मंत्र कण्ठ होने लगते हैं और आगे वेदपाठ सुगम होता है। हमने घडी लगाकर देखा है कि, घण्टेमें ५०० मंत्र पढे जा सकते हैं। ३० वार वेदपाठ होनेसे बहुतसे मंत्र स्मरण होने लगते हैं। मंत्र-वचनोंका परस्पर संबंध आप ही आप अपने मनके सामने आने लगता है। और वेदका मन्तव्य वेदमंत्र सामने आनेसे स्पष्ट होने लगता है। और केवल पाठसे भी अद्भुत आनंद होता है। इस आनन्दका वर्णन शब्दोंसे नहीं हो सकता है। यह आनन्द तो वेही जानेंगे कि, जो वेदपाठ करेंगे। केवल पाठमात्रमें मन एकाग्र करनेका सामर्थ्य है। और मनकी एकाग्रता आनन्द देती है।

## मनकी एकाग्रता

वेदके काव्यकी यह विशेषता है कि वह ठीक स्वरके साथ, अथवा मध्यम एक श्रुतिमें पठन करनेसे उस स्वरमें पाठकका मन तल्लीन हो जाता है। यह तल्लीनता तब आती है, कि जब विना रुके एक मध्यम स्वरसे वेदमंत्रोंका पाठ होने लगता है। जिन्होंने वेद कण्ठ किये हैं, उनके लिये तो यह मनकी एकाग्रता सहज साध्य होती है। पर जो ग्रन्थपाठक होंगे, उनको भी १० वार पाठ होनेके पश्चात् एक स्वरमें बिना रुके पाठ करनेका अभ्यास होता है। तब मन वेदस्वरमें एकाग्र होने लगता है और सच्चा स्वरानन्द तो तब मिलता है।

जिनको थोडा संस्कृतका अभ्यास है, वे तो दस वारके पाठके पश्चात् बहुतसे मंत्रोंका अर्थ भी जानने लगते हैं और २५ वार पाठ होनेपर तो संस्कृतज्ञोंको आधेसे अधिक मंत्रोंका अर्थ स्वयं स्फुरण होने लगता है। अर्थात् केवल पाठ भी लगातार और प्रतिदिन करनेसे वेदार्थकी दृष्टीसे तथा मानसिक एकाग्रता होनेकी दृष्टीसे निःसंदेह लाभ होता है।

## एक भ्रम

पाठकोंमें सामवेदके अंकोंके विषयमें एक भ्रम है। वे समझते हैं कि, साममन्त्रोंके स्वर-गानके स्वर हैं। पर वास्तविक वैसी बात नहीं है।

१ ऋग्वेद मंत्र—

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ऋ. ३।६२।१०

२ सामवेद मंत्र—

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

साम १४६२

यहां पाठक देख सकते हैं कि, जिस अक्षरके नीचे स्वर है उस अक्षरपर सामवेदमें ३ अंक है। जिस अक्षरके ऊपर खडा स्वर है उस अक्षरपर सामवेदमें २ अंक है और नीचे ऊपरके मध्य स्थानके अक्षरपर १ अंक है। अर्थात् ये अंक ऋग्वेदके ही स्वर दर्शानेवाले हैं और गानके साथ इन अंकोंका कोई संबंध नहीं है, इसी मंत्रका गान इस तरह होता है—

२ सामगायन—

तत्सवितुर्वरेणियोम्। भार्गो देवस्य धी--
माहीऽर। धियो यो नः प्रचो ऽ१२-
१२ हिम् स्थिआऽर दायो ओऽ३४५ ॥

यहां जहां अंक हैं वे गान स्वरोंके सूचक हैं। इसलिये यह गान गानेके लिये हैं और यह गाने चाहिये। पर सामवेदमें जो मन्त्र हैं और सामवेदके मंत्रोंपर जो अंक हैं, वे केवल उदात्तानुवाद स्वरके ही दर्शक हैं, गानस्वरोंके दर्शक नहीं है। यह स्पष्ट होनेपर भी लोग भ्रमसे अंकोंवाला सामवेद मंत्र देखते ही अशुद्ध रीतिसे अशुद्ध गान गानेके समान कुछ न कुछ आलाप लेने लगते हैं !!! यह जनताका भ्रम देखकर आश्चर्य होता है !!! इस तरह प्रमाद करना उचित नहीं है।

वेदमन्त्रोंका स्वरोच्चारण प्रत्येक वेदका विभिन्न है। ऋग्वेद, वाजसनेयी यजुर्वेद, तैत्तिरीय यजुर्वेद, काण्व यजु-

वेद, सामवेद और अथर्ववेदके वेदपाठमें विभिन्नता है। वह परंपरासे शाखाध्ययन करनेवाले जानते हैं। वह लेखनमें बताना अशक्य है। सर्व साधारणके लिये एक मध्यम स्वरमें एक श्रुतिसे मन्त्रपाठ करना योग्य है। प्रातःकालमें निम्न स्वरसे, मध्यदिनमें मध्यस्वरसे और सायं समयमें ऊंचे स्वरसे वेदमंत्र बोले जा सकते हैं। 'सा रे ग' अथवा 'सा म नी' ये हार्मोनियमके स्वरोंके साथ पाठक वेद पाठ कर सकते हैं। साधारण मनुष्यके लिये केवल मध्यम स्वरमें मन्त्रपाठ करना योग्य है।

रागके आलापोंमें भी मंत्रोंका गान होता है। पर जो अर्थके ज्ञानके लिये वेदपाठ करना चाहते हैं, उनके लिये इसकी आवश्यकता नहीं है। वे अपने अनुकूल कष्ट न हो ऐसे स्वरमें वेदपाठ करें। अपने उच्चारे मंत्र अपने कानोंको सुनाई दें, इतना स्पष्ट उच्चारण बस है। जो नाना रागोंमें वेदमंत्रोंका गान करना चाहते हैं, वे गानविद्या जाननेवालेसे गान सीखें। यह विद्या सीखनेसे ही, अर्थात् गुरुमुखसे ग्रहण करनेसे ही आसकती है।

अर्थज्ञानके लिये वेद पाठ करनेवालोंको सामवेदका पाठ करनेकी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि ये मंत्र ऋग्वेदमें है, अर्थात् ऋग्वेदके पाठसे सामवेदका पाठ हो जाता है। इस ऋग्वेदमें नहीं है ऐसे ७०।८० मंत्र इस सामवेदमें हैं, वे शांख्यायन शाखाके ऋग्वेदमें प्रायः हैं। इतने लिखकर पाठ करनेसे सामपाठकी पृथक् आवश्यकता नहीं रहती। वस्तुतः 'या ऋक् तत् साम' जो ऋग्वेदका मंत्र है, वही आलापके साथ गानेसे सामगान हो जाता है। इस लिये भी सामवेदका पाठ करनेकी पृथक् आवश्यकता नहीं है। अधिकसे अधिक जो सामंत्र ऋग्वेदमें नहीं हैं, उतने लिखकर उनका पाठ करना योग्य माना जा सकता है।

## नित्यपाठके लिये वेद

वास्तवमें नित्यपाठके लिये चारों वेदोंके मन्त्र पुनरुक्ति न करते हुए प्रकरण बांध कर छापने चाहिये। इससे करीब १६००० मंत्र नित्य पाठके लिये मिलेंगे और प्रतिदिन एक घण्टा वेद पाठ करनेसे एक महिनेमें संपूर्ण वेदपाठ हो सकेगा। ऐसी पुस्तक बननेके लिये लिखवाई और छपाई मिलकर कमसे कम १५०००) रु. व्यय होगा और तीन हजार प्रतियां इतने व्ययसे बनेगीं। अर्थात् ७) रु. मूल्यसे ऐसी नित्य पाठकी पुस्तक लोगोंको मिलेगी।

## मंत्र--पद--अन्वय

नित्य पाठके लिये चारों वेदोंके प्रकरण बनने चाहिये यह पहिली बात है। इसी तरह उपर मंत्र, बीचमें पदपाठ और नीचे अन्वय ऐसे वेदोंके पुस्तक छापकर तैयार मिलने चाहिये। उदाहरणके लिये एक मंत्र यहां हम देते हैं–

इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा।
शमस्य च शृङ्गिणो वज्रबाहुः।
सेदु राजा क्षयति चर्षणीनां।
अरान् न नेमिः परिता बभूव॥ ऋ. १।३२।१५

पदपाठ — इन्द्रः। यातः। अवऽसितस्य। राजा। शमस्य। च। शृङ्गिणः। वज्रऽबाहुः। सः। इत्। ऊँ (इति)। राजा। क्षयति। चर्षणीनां। अरान्। न नेमिः। परि। ता बभूव॥

अन्वय पाठः— वज्रबाहुः इन्द्रः, यातः अवसितस्य, शमस्य शृङ्गिणः च, राजा (अस्ति)। सः इत् उ चर्षणीनां राजा (भूत्वा) क्षयति। ता (तानि सः) परि बभूव, अरान् नेमिः न॥

इसके नीचे थोडीसी टिप्पणी दी जाय तो अच्छा होगा। इसकी उक्त वेदमुद्रणसे चारगुणा लिखवाई और छपाई होगी। अर्थात् यह ६००००) साठ हजार रु. से बननेवाला ग्रंथ होगा और यह तीन भागोंमें प्रकाशित होगा और मूल्य कमसे कम १५) होगा। पर नित्यपाठके लिये यह अप्रतिम ग्रंथ होगा और साधारण संस्कृत जाननेवाला इस ग्रंथका २।३ वार पाठ करनेसे वेदज्ञाता बन सकेगा। तथा वेदकी कठिनाई की समस्या इसके बननेसे तत्काल दूर होगी।

वास्तवमें वेदके अर्थज्ञानकी कोई समस्या ही नहीं है। इस तरहके ग्रंथ निर्माण करनेकी ही बात है। ऐसे ग्रंथ हो जायंगे, तो हरएक वेदधर्मी वेदपाठ करेगा और ४।५ वर्षोंमें वेदका ज्ञाता बनेगा। यदि किसीकी न्यूनता है, तो इस ग्रंथके लिये व्यय करनेवाले धनिकोंकी ही न्यूनता है। धनी लोग इसका महत्व समझते नहीं, और वैदिक-धर्मियोंमें भी वेदज्ञानकी उतनी आतुरता नहीं है कि जितनी

*

आतुरता ऐसे कार्य करनेके लिये आवश्यक होती है। केवल इस कारण ही वेद दुर्बोध रहा है।

## सुबोध वेद

आधुनिक बाणभट्टकी कादंबरीकी अपेक्षा वेद बहुत ही सुबोध है। वेदमंत्रोंमें लंबे लंबे समास नहीं हैं। जैसे आधुनिक ग्रंथोंमें होते हैं। बडे भारी कठिन पद नहीं। सीधे सादे पद हैं। इसलिये यदि वेद इस तरह पूर्वोक्त प्रकार मुद्रित किये गये, तो सबकी गति वेदमें हो सकती है। देखिये एक दो मंत्र वेदके कैसे सरल हैं—

त्वं महाँ इन्द्र तुभ्यं ह क्षाः
अनु क्षत्रं मंहना मन्यत द्यौः।
त्वं वृत्रं शवसा जघन्वान्
सृजः सिन्धूँरहिना जग्रसानान् ॥ ऋ. ४।१७।१

पदपाठ— त्वं। महान्। इन्द्र। तुभ्यं। ह। क्षाः। अनु। क्षत्रं। मंहना। मन्यत। द्यौः। त्वं। वृत्रं। शवसा। जघन्वान्। सृजः। सिन्धून्। अहिना। जग्रसानान्॥

अन्वय— हे इन्द्र! त्वं महान् (असि)। क्षाः मंहना तुभ्यं ह क्षत्रं अनुमन्यत। द्यौः (च अनुमन्यत) त्वं शवसा वृत्रं जघन्वान्। अहिना जग्रसानान् सिन्धून् सृजः॥

अर्थ— हे इन्द्र! तू बडा है। पृथिवीने तेरे महत्त्वपूर्ण क्षात्रबलके लिये अनुकूलता दर्शायी। द्युलोकने भी (अनुकूलता दर्शायी)। तूने अपने सामर्थ्यसे वृत्रका वध किया। शत्रुने ग्रस्त किये नदियोंके प्रवाहोंको तुमने खुला कर दिया।

कितना सरल अर्थ है देखिये। अब इस मन्त्रसे बोध इस तरह लिया जाता है।

१ त्वं महान् असि— तू बडा है। जैसा वह बडा है, वैसे हम बडे बनें। बडे बननेका यत्न करना चाहिये।

२ त्वं वृत्रं जघन्वान्— तूने वृत्रका वध किया। वृत्र नाम घेरनेवाले शत्रुका है। शत्रुका वध करना योग्य है। राजा राष्ट्रके शत्रुका वध करे, राष्ट्रको निर्भय करे। स्वयं बडा बलवान बने और शत्रुका नाश करे।

३ अहिना जग्रसानान् सिन्धून् सृजः— शत्रुने अपने आधीन किये जलप्रवाहोंको इन्द्रने सब लोगोंके हित करनेके लिये मुक्त किया। इसी तरह राष्ट्रका राजा शत्रुके आधीन हुए जलप्रवाहोंको राष्ट्रकी प्रजाका हित करनेके लिये शत्रुके अधिकारसे मुक्त करे और सबके हितार्थ खुले छोड देवे।

ऐसा करनेवाले वीरकी सब प्रशंसा गाते हैं। इस तरह अर्थबोध सरल है और सबके समझमें आ सकता है।

मंत्रके सरल अर्थको देखना और उस अर्थको व्यक्तिके जीवनमें तथा राष्ट्रके जीवनमें घटाना यह है वैदिक पद्धति और यह पद्धति अत्यंत सरल है। इन्द्रने वृत्ररूपी शत्रुको मारा। यह व्यक्तिके जीवनमें घटानेसे कामक्रोधरोगादि शत्रुओंको दूर करनेका भाव स्पष्ट हो जाता है, क्योंकि ये ही व्यक्तिके क्षेत्रमें शत्रु है। और इन्द्र ही राष्ट्रीय क्षेत्रमें नरेन्द्र अर्थात् राजा है। वह अपने राष्ट्रीय शत्रुको, अन्तर्गत और बाहरके शत्रुको दूर करे यह भाव राष्ट्रीय क्षेत्रमें प्रकट होता है।

यह भाव मन्त्रके मननसे विदित हो जाता है। इसी लिये मन्त्रका मनन करना चाहिये, ऐसा अनादि कालसे कहते आये हैं। मनन करनेसे मन्त्रसे बोध मिलता जाता है। अब एक उदाहरण और देखिये—

युध्मो अनर्वा खजकृत् समद्वा
शूरः सत्राषाड् जनुषेमषाळ्हः।
व्यास इन्द्रः पृतनाः स्वोजाः
अधा विश्वं शत्रूयन्तं जघान ॥ ऋ. ७।२०।३

(युध्मः) युद्ध करनेमें अपना मन रखनेवाला, युद्ध करनेमें तत्पर, (अनर्वा=अन्+अर्वा) युद्धमें कभी पीछे न हटनेवाला अतएव शत्रुरहित, (खज-कृत्) युद्ध करनेमें अत्यंत कुशल, (समद्वा) स्पर्धा करनेवाला, शत्रुसे विरोध करनेमें समर्थ, (शूरः) शूरवीर, (सत्रा+षाट्) सब शत्रुओंका पराभव करनेवाला, शत्रुओंको भगानेवाला, शत्रुका पूर्णनाश करनेवाला, (जनुषा ईं अषाळ्हः) जन्मसे ही सदा विजयी, शत्रुद्वारा कभी पराभूत न होनेवाला, जन्मस्वभावसे ही शत्रुका विनाश करनेमें प्रवीण, (स्वोजाः= सु×ओजाः) उत्तम बलवान, प्रभावी सामर्थ्यसे युक्त, ऐसा यह (इन्द्रः) शत्रुका विदारण करनेवाला वीर (पृतनाः वि आसे) शत्रुके सैनिकोंको तितर बितर करता है, भगा देता है। और (शत्रूयन्तं विश्वं जघान) शत्रुता करनेवाले सब दुष्टोंको मारता है।

यह मंत्र अत्यंत स्पष्ट है और अत्यंत बोध देनेवाला है। ये दो मंत्र उदाहरणके तौरपर यहां बताये हैं। ऐसे ही सरल अर्थवाले सहस्रों मन्त्र वेदमें हैं। इसका दूसरा कोई अर्थ नहीं होता है। अर्थ स्पष्ट है, सरल है, किसी तरह अधिक मननकी आवश्यकता नहीं है। वेद प्रायः ऐसे मंत्रोंसे भरा है। सरल मंत्रोंके उदाहरणके लिये और यहां एक मंत्र दिखलाते हैं- -

पिप्पली क्षिप्तभेषज्यूतातिविद्धभेषजी।
ता देवाः समकल्पयन्नियं जीवातवा अलम्॥

अथर्व. ६।१०९।१

'पिप्पली औषधी (क्षिप्त–भेषजी) उन्मादरोगकी औषधी है, और (अतिविद्ध भेषजीः) अत्यंत वींधने-वाली बीमारीकी औषधि है (देवाः तां समकल्पयन्) देवोंने उस औषधिको संकल्पपूर्वक बनाया है। (इयं जीवातवे अलं) यह औषधि दीर्घजीवनके लिये पर्याप्त है।'

यह अर्थ भी अत्यंत सरल और अत्यंत स्पष्ट है। किसी तरह विशेष दूरान्वय की अथवा शब्दके गूढ अर्थ देखनेकी आवश्यकता नहीं है। जो आयुर्वेद, वैद्यक, रोगनिवारण आदि विषयके मंत्र हैं, वे सब ऐसे ही सरल और सुबोध हैं। ऐसे मंत्र भी करीब एक हजार हैं कि जहां अर्थके विषयमें संदेह नहीं हो सकता।

इन मंत्रोंकी भाषा सरल, सुबोध, तत्काल समझमें आने-वाली है। ऐसे मंत्रोंके अनेक अर्थ भी नहीं होते हैं। इनका अर्थ एक ही होता है और वह भी सरल है।

वेदमें कई मंत्र कूटमंत्र भी होते हैं। इनमें भी दो प्रकारके मंत्र हैं। एक मंत्र ऐसे हैं कि, जिनका अर्थ सरल होने पर भी भाव समझमें आना कठिन है और दूसरे वे मन्त्र कि जिनका शब्दार्थ भी कठिन और भाव भी कठिन। ऐसे मंत्र चारों वेदोंके पांच छः सो मंत्रोंसे भी कम हैं। इनको सचमुच कठिन कह सकते हैं। पर इनकी संख्या बहुत नहीं है। इस प्रकारके मंत्रोंका एक उदाहरण देखिये—

यो यज्ञो विश्वतस्तन्तुभिस्तत
एकशतं देवकर्मेभिरायतः।
इमे वयन्ति पितरो य आययुः
प्रवयाप वयेत्यासते ततेः। ऋ १०।१३०।१

इस मंत्रके शब्द सरल अर्थवाले हैं। इनमें एक भी कठिन अर्थवाला पद नहीं है। पर इसका भावार्थ कठिन है। इस मंत्रका शब्दार्थ देखिये—

(यः यज्ञः) जो यज्ञ (तन्तुभिः विश्वतः ततः) अनंत धागोंसे सब ओर फैला है और जो (देवकर्मेभिः एकशतं आयतः) देवोंके लिये कर्म करनेवालोंके द्वारा एक सौ (वर्ष) पर्यंत विस्तार युक्त हुआ है। (ये पितरः आययुः) जो पितर आये हैं, (इमे वयन्ति) वे यहां कपडा बुन रहे हैं। (तते आसते) फैलाये तानेके पास वे बैठते हैं और कहते हैं कि (प्र वय) आगे बुनो, (अप व्यय) बाजूमें बुनो।

इस मंत्रके शब्द अत्यंत स्पष्ट अर्थवाले हैं। एक भी कठिन पद यहां नहीं है। पर अर्थ गूढ है। यहां सौ वर्ष की आयुका वस्त्र बुनना है। यह सौ वर्ष दीर्घायुका कपडा बुनना है। दिव्य कर्म करनेवालोंके प्रयत्नसे यह कपडा बुना जाना चाहिये। सौ वर्षका जो आयुका काल है, वह इसको लंबाई है। प्रतिदिन दिव्य कर्मोंके सूत्रोंसे तिरछे धागे भरे जाते हैं। इनमें रंगी बिरंगी धागोंसे सौंदर्य लाया जाता है। जो सत्कर्म करनेवाले हैं और जो संरक्षक हैं, वे इस वस्त्रके समीप बैठते हैं और वे कहते रहते हैं कि हां यहांतक हुआ है अब आगे इस तरह करो, इसके आगे इस रीतिसे करो। ऐसा वारंवार कहते हैं। संक्षेपसे यह भाव इसका है। इस पर जितना विचार होगा उतना थोडा है।

ऐसे मंत्र समझनेके लिये कठिन होते हैं। दूसरे मन्त्र जिनमें पदार्थ भी कठिन और अर्थ तथा भावार्थ भी कठिन होते हैं वे सचमुच कठिन हैं। पर ऐसे मंत्र बहुत थोडे हैं। अस्तु इस तरह विचार करनेसे ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है कि, सचमुच वेदका अर्थज्ञान होना कठिन नहीं है। साधारण मनुष्य संस्कृत सीखे और वेदका पारायण करता जाय। दस पारायण होनेपर आधे वेदके मन्त्र समझमें आते जांयगे। और आगे जैसे पारायण होते जांयगे वैसे अधिक मंत्र समझमें आते जांयगे।

वेद पढनेवालोंकी सुविधाके लिये मन्त्र–पद–अन्वय–सरल अर्थ जिसमें क्रमपूर्वक छापे हैं ऐसे पुस्तक तैयार होने चाहिये। यदि ये बनेंगे तो वेद धर्मका प्रचार अतिशीघ्र हो जायगा। आजतक यह क्यों नहीं बना, यह बात समझमें नहीं आती है। वेद प्रचारपर इतना व्यय हुआ, पर ५० ६०

हजार रु. खर्च करके ऐसा ग्रंथ बनानेकी बात किसीके ध्यानमें भी आयी नहीं !! इसमें कुछ भी मुश्किल नहीं है। केवल थोडेसे प्रयत्नकी ही आवश्यकता है। पर यह कार्य अतिशीघ्र होना चाहिये।

## धन होनेपर भी दारिद्र्य

वेद जैसा अपूर्व ग्रन्थ अपने पास हो और वह अति दुर्बोध ही बना रहे तो उसके अभिमानसे किसका क्या लाभ होनेवाला है ? साहुकारके घरकी तिजोरीमें करोडों रु. भरे हैं, पर उस पेटीकी चावी गुम हो चुकी है। नयी चावी नहीं बनती और पुरानी मिलती नहीं। तो जिस तरह वह धनी निर्धन जैसा होता है, वैसी ही भारत वर्षकी अवस्था बनी है। भारतीयोंके पास वेद है, पर वेद सरल होनेपर भी उसका समझनेवाला कोई नहीं है। वह वेद किसीके समझमें नहीं आता, यही उसकी महत्ता आज वर्णन की जाती है !!! भला इस तरहकी महत्ताका अर्थ ही क्या है ? यदि सचमुच वेद समझमें न आनेवाला है, तब तो वह मानवोंके लिये निकम्मा है। जो समझमें आ सकता है, और आचरणमें लाया जा सकता है, वह तो धर्मग्रंथ माना जा सकता है। पर जो किसीके समझमें ही नहीं आता, वह धर्मग्रंथ किस तरह माना जा सकता है ?

वास्तवमें बात यह है कि, वेद समझमें आनेवाला ग्रंथ है। हमने इसकी प्रक्रिया ऊपर बतायी है। वैसा ग्रंथ तैयार करनेपर वेद आसानीसे समझमें आ सकता है। आजतक वेदके विषयमें हिंदुओंने जो अत्याचार किये उसका फल आजकी हिन्दुओंकी अवस्था है। इसका थोडासा वर्णन अब हम करते हैं—

## वैदिकोंकी वृत्ति

वास्तवमें वैदिकोंके प्रयत्नसे आजतक वेदकी सुरक्षा हुई है। इसलिये वैदिक ब्राह्मणोंके जगत् पर अनंत उपकार है। निःसंदेह इनके उपकार हैं, पर इन्होंने एक बडा प्रमाद भी किया, जिस कारण इनके उपकारका लाभ जितना होना चाहिये था, उतना नहीं हो सका। 'कलौ आद्यन्ताव-स्थितिः' ऐसा एक वचन खडा करके कलियुगमें ब्राह्मण और शूद्र ही हैं, कलियुगमें क्षत्रिय और वैश्य नहीं है, ऐसा कह कर क्षत्रिय वैश्योंको भी शूद्रोंमें गिन लिया। इससे ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य ये तीन वर्ण वेदोंके अधिकारी थे और वेद पढते थे, अकेले शूद्र ही वर्जित थे। पर वे शूद्र भी 'अदुष्टकर्मणां उपनयनं' सत्कर्म करनेवाले शूद्रोंका उपनयन होकर उनको भी वेदका अधिकार मिलता था, उस स्थानपर केवल ब्राह्मणोंको ही वेदका अधिकार रहा। स्त्रियोंको भी उपनयन न होनेसे वेदाधिकार रहा नहीं। जनसंख्यामें आधी स्त्रियां होती हैं, उनको वेदाधिकार नहीं। यद्यपि वेदमें मन्त्रद्रष्ट्री ऋषिकाएँ हैं, तथापि उनके मंत्रोंको पढनेका अधिकार भी स्त्रियोंको न रहा। क्षत्रिय-वैश्य-शूद्रोंका तो वैसा ही अधिकार न रहा। केवल ब्राह्मणोंको ही वेदाधिकार रहा।

इसका परिणाम यह हुआ कि बहु जनसंख्याका वेदसे संबंध ही न रहा। और केवल ब्राह्मणोंके पास ही वेद रहा, उन्होंने वेदका रक्षण तो किया, पर बहुजन समाजसे वेदका संबंध तोड दिया। वेदमें मानवधर्म है, और मानवसमाजके तीन चौथाई भागको वेदका पता भी नहीं। यह अवस्था हितकारक नहीं है। इसका परिणाम बहुजनसमाज वेदसे दूर हुआ। आजतक यही अवस्था रही है। आज भी हिंदुओंमेंसे बहुजनसमाज वेदको जानता भी नहीं, फिर पढना, आचरण करना और उस वेद धर्मका पालन करना तो दूर ही रहा।

अच्छा केवल ब्राह्मणोंने वेदका संरक्षण किया। इसका अर्थ वेदके शब्दोंका उन्होंने संरक्षण किया। बडे परिश्रमसे संरक्षण किया। जगत्में इसके लिये दूसरी तुलना नहीं है, ऐसी युक्तिसे इन्होंने वेदोंका संरक्षण किया। पद अक्षर वर्ण स्वर मात्रा सबका उत्तम रीतिसे संरक्षण किया। यह सब यश ब्राह्मणोंको ही सर्वथा है। पर उन्होंने भी वेदका अर्थ जाननेका यत्न नहीं किया। वेदके अक्षरोंको वे कण्ठ करते रहे। १२ वर्ष अध्ययन करके एक वेदका संरक्षण ये करते थे। चारों वेदोंका संरक्षण करना कठिन कार्य था, एक एक वेदके पाठक तैयार किये गये और इन्होंने संहिता-ब्राह्मण-आरण्यक-सूत्र आदि ग्रंथोंके अक्षरोंका संरक्षण किया। स्वयं भी अर्थ देखनेका यत्न नहीं किया। यह भी एक आश्चर्य ही है !!! इतना अक्षरोंका भार उठाना, पर एक मंत्रका भी अर्थ न देखना, यह कितना आश्चर्य है ! इनका वर्णन निरुक्त-कारने ऐसा किया है।

स्थाणुरयं भारहारः किलाभूत्
अधीत्य वेदं योऽभिजानाति नार्थम् ।
निरुक्त १।६।१९

'यह भार उठानेवाला खम्बा है, जो वेदोंका पठन करके मन्त्रके अर्थको नहीं जानता।' निरुक्तकारके समयमें भी ऐसे वेदपाठी होंगे, जिनके विषयमें उसने ऐसा लिखा है। आज सेकडों वर्षोंसे वेदपाठियोंका वेदाध्ययन ऐसा ही चला है। वेदरक्षण करनेके लिये इन सबको सहस्रशः धन्यवाद हैं। पर इन्होंने ब्राह्मण जातिको छोडकर किसी अन्यको वेद सिखाया नहीं। न वेदपाठके पास अन्योंको आने दिया। शूद्र वेदपाठ सुने तो उसके कानमें तप्तरस डालनेतक दुराग्रह बढाया। अन्य जातियां वेद पाठियोंकी निंदा इसी कारण करने लगी। बुद्धने अपना संप्रदाय पृथक् निर्माण किया और प्राकृत भाषामें उपदेश करना प्रारंभ किया। यह एक प्रकारका वैदिकोंका द्वेष ही था। ऐसी प्रवृत्ती क्षत्रिय, वैश्य शूद्रोंमें होनेका कारण ही यह ब्राह्मणोंकी वृत्ति था। अतिप्राचीन वैदिक समयमें त्रैवर्णिक अर्थात् ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य ये वेदाध्ययन करते थे। अतः वे संघटित थे। पश्चात् 'कलौ आद्यन्तावस्थितिः' कलियुगमें ब्राह्मण और शूद्र ही हैं, बीचके क्षत्रिय वैश्य नहीं है। ऐसा कहनेसे जो वेदाध्ययनका लोप हुआ, उसीका फल आज हम भोग रहे हैं।

## वेदसंरक्षणकी व्यवस्था

ऐसा भी मान सकते हैं कि क्षत्रिय, वैश्यादिकोंने ब्राह्मणोंकी आजीविका चलानेका भार उठाया और ब्राह्मणोंसे कहा कि तुम 'वेदोंकी सुरक्षा करो'। ब्राह्मणोंने अपना संपूर्ण जीवन वेदोंकी सुरक्षाके लिये लगाया। अपनी आजीविकाके लिये कुछ भी दूसरा धंदा नहीं किया, धन नहीं कमाया, सुख नहीं भोगा। सब जीवन वेदोंकी सुरक्षाके लिये अर्पण किया। और वेदोंको आज दिनतक सुरक्षित रखा। आज जो वेद मिल रहे हैं वे इनके उठाये कष्टोंके कारण ही मिल रहे हैं। यह सब यश ब्राह्मणोंके लिये ही है।

अन्य वर्णके लोग ब्राह्मण जातिका यह उपकार जानते थे। इसीलिये उन वैदिक ब्राह्मणोंका वे मान रखते थे और उनकी आजीविका चलाते थे। पर अंग्रेजोंके इस देशमें आनेके पश्चात् यह बात नहीं रही। अंग्रेजोंकी हिन्दुओं में फूट डालनेकी नीतिके कारण ब्राह्मण और अब्राह्मणोंमें फूट उत्पन्न हुई और वह बढ गयी। और अन्य जातियों मानने लगीं की ब्राह्मण केवल बैठकर खाते हैं और हम कष्ट करके अन्न उत्पन्न करते हैं। इस तरहकी विचारधारासे वैमनस्य बढ गया और वेदविद्याके विषयमें अब्राह्मणोंमें आदर तो था ही नहीं, वे तो वेदोंसे कोसों दूर ही रहे थे। इसलिये उनके मनमें वेदोंके विषयमें आदर कैसे रह सकता था? इस तरह वेदका आदर नष्ट हुआ, वेदकी सुरक्षा करनेवाली ब्राह्मण जातीका आदर भी नष्ट हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि ब्राह्मण जातिकी आजीविका चलना बंद हुआ, और ब्राह्मणोंको अपनी आजीविकाके लिये दूसरे व्यवसाय करने पडे। इससे यह हुआ है कि आज वेदकी सुरक्षा कैसी होगी यह चिन्ता उत्पन्न हुई है। जो ५० वर्षोंके पूर्व नहीं थी।

## भविष्यकी चिन्ता

वेदपाठियोंकी संख्या कम हो रही है और भविष्यमें वेदपाठी नहीं रहेंगे ऐसा दीख रहा है। वेदपाठी वेदका अर्थ जानते नहीं थे, पर कण्ठस्थ तो रखते थे। आज वेद जाननेवाले करके नामधारी पैदा हुए जो वेदको कण्ठस्थ तो नहीं करते और वेदका अर्थ भी संपूर्णतया नहीं जानते। यह अवस्था बहुत ही भयानक है।

हिंदुधर्म, हिंदुजाति तथा हिंदुसंस्कृतिके प्राणके स्थानमें वेद हैं। तथापि संपूर्ण हिंदु जातिके मनमें वेदके लिये कोई आकर्षण नहीं है। इसका कारण इतना ही है कि हिंदु जातिका वेदोंके साथ संबंध छूटकर हजारों वर्ष बीत गये हैं और अन्यान्य आधुनिक संप्रदायके ग्रंथोंके साथ हिंदु जातिका आकर्षण बढ गया है। इस कारण हिंदुजातिकी बडी हानि हो रही है। पर इसकी पर्वा किसीको भी नहीं है। हिंदुजातिके पास ऐसा कोई एक ग्रंथ नहीं है कि, जिसके संमानके लिये हिंदुजाति उठ सकती है। यह अनेक वर्षोंकी उदासीनता आज हिंदु जातिके लिये बाधक हो रही है।

आधुनिक ब्रह्म समाज, प्रार्थनासमाज, देवसमाज तथा आर्य समाज इन संस्थाओंमें एक ही आर्यसमाजने वेदोंके ऊपर सब आर्यजातिका मन केन्द्रित करनेका बडा भारी ओजस्वी प्रयत्न किया। इसका संपूर्ण श्रेय श्री स्वामी ऋषि दयानन्द सरस्वतीजीको है। परंतु हिंदुजातिके कोने कोने

*

तक वेदका संदेश पहुंचानेका कार्य इस संस्थासे भी नहीं हो सका। अब भविष्यमें क्या होगा, वह आज कहना कठिन है। पर इस समय वेदके विषयकी श्रद्धा हिंदु मात्रमें बढजानेका दिन बडा दूर ही है यह स्पष्ट है। वेद विषयमें श्रद्धा बढानेके कार्यको करनेवाली संस्था आर्यसमाजसे भिन्न दूसरी आज नहीं है यह भी सत्य है।

## याज्ञिक और यज्ञकर्ता

वेदका संरक्षण करनेवालोंमें वेदपाठियोंके कार्यकी समालोचना हमने की। दूसरे स्थानपर यज्ञकर्ता अथवा याजकोंका स्थान है। वेद यज्ञके लिये उत्पन्न हुए हैं। ऐसा ये मानते हैं और वेदके मंत्रोंको यज्ञके कर्ममें ये प्रयुक्त करते हैं। श्रौत, स्मार्त और पौराणिक कर्म जो उपनीत द्विज करते हैं, उनमें वेदमंत्र बोले जाते हैं। श्रौत यज्ञोंमें वेदमंत्र प्रयुक्त होते हैं। पौराणिक पूजामें भी पुरुषसूक्त जैसे सूक्त बोले जाते हैं। जिनका उपनयन नहीं हुआ, वह जो कर्म करेगा, उसमें वेदमंत्र नहीं बोले जाते, उनके स्थान पर संस्कृत श्लोक बोले जाते हैं। पर जो कर्म उपनयन हुआ हुआ मनुष्य करता है, उसमें वेदमंत्रोंका प्रयोग होता है। यह सार्थ अथवा अर्थानुकूल ही होता है ऐसी बात नहीं है। नवग्रहोंके मंत्र अन्वर्थक नहीं हैं, पूजामें १६ उपचारोंके लिये १६ मंत्र पुरुषसूक्तके बोले जाते हैं, ये भी अर्थानुकूल नहीं हैं। अर्थानुसारी हो या न हो, कर्ममें वेदके मंत्र अवश्य बोले जायंगे। इस परिपाटीसे वेदके मंत्रोंका संरक्षण हुआ इसमें संदेह नहीं है। चारों वेदोंके सब मंत्र किसी न किसी कर्ममें बोले जाते हैं। वेदके रक्षण करनेके लिये इन याज्ञिकोंके लिये ऐसा करना पडा है और इससे वेदमन्त्रोंका आदर बढ गया और रक्षण भी हुआ।

पर इसमें एक बात बनी वह यह कि उपनयनका अधिकार जन्मतः ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्योंको था। सत्कर्मकर्ता शूद्रोंको विशेष प्रसंगसे वह अधिकार मिलता था। यह अपवाद था। इन तीन वर्णोंमें कलियुगमें क्षत्रिय-वैश्य न होनेसे उपनयनका अधिकार केवल ब्राह्मणको ही रहा। अन्य सब लोग शूद्रोंमें संमिलित हुए, इस कारण उपनयनसे वंचित रहे, इसी हेतुसे वेदाधिकारसे भी वे दूर रहे।

शूद्रने वेदमंत्र सुने तो उसके कानमें ( त्रपुजतु ) लाख या सीसा पिघलाकर डालनेतक पराकाष्ठाका दण्ड ग्रंथोंमें लिखा है पर ऐसा बनता था ऐसा दीखता नहीं। वैदिक समयके कवष ऐलूषकी कथा भी देखने योग्य है।

> ऋषयो वै सरस्वत्यां सत्रं आसत। ते कवषं ऐलूषं सोमात् अनयन्। दास्याः एत्रः कितवो अब्राह्मण' कथं नो मध्ये दीक्षिष्ट इति। तं बहिः धन्वोदवहन्। अत्र एनं पिपासा हन्तु। सरस्वत्या उदकं मा पात् इति। स बहिः धन्वो-दूळहः पिपासयाविद्ध एतदपोनप्त्रीयं अपश्यत्। ... तं सरस्वती समन्तं पर्यधावत् ... ते वा ऋषयोऽब्रुवन्. विदुर्वा इमं देवा, उप इमं ह्वयामहा इति।
>
> ऐ० ब्रा० २।१९

'ऋषियोंने सरस्वती तीरपर सत्र नामक यज्ञ प्रारंभ किया। उनमें कवष ऐलूष ऋषि बैठा था। ऋषियोंने वहांसे उसको बाहर निकाला और कहा, यह दासीपुत्र जुआरा हमारे अन्दर कैसे बैठ सकता है। उन ऋषियोंने उसको नदीसे दूर वालुका प्रदेशमें रखा। प्यास इसको मारे, सरस्वतीका जल भी इसे न मिले। इस तरह वह प्याससे दुःखी हुआ और यह अपोनप्त्रीय सूक्त गाने लगा।... सरस्वती नदी दौडती हुई उसके पास पहुंची... यह देखकर ऋषि कहने लगे कि, देवोंने इसकी प्रार्थना सुनी, इसलिये हम भी इस कवष ऐलूषको अपने सत्रमें बुलायेंगे।'

ऐसा कहकर उन ऋषियोंने उसे अन्दर बुलाया। इस ऋषिके सूक्त ऋ. १०।३०-३४ तक हैं। यह कथा ऐतरेय ब्राह्मणमें है। शांखायन ब्राह्मणमें यह शूद्र अथवा अब्राह्मण होनेका वचन है। कुछ भी हो इस ऋषिने देखे ये पांच सूक्त ऋग्वेदमें हैं। ऐसे सूक्त द्रष्टा ऋषिको भी इतने कष्ट हुए थे। दासीपुत्र, जुआरा ऐसी गालियाँ भी इसको सुनाई। शूद्रके लिये ये कष्ट होते रहे। फिर शूद्रोंका प्रेम वेदपर किस तरह हो सकता है? मन्त्र सुननेपर कानमें तप्त रस गिरानेका दण्ड मिले और मन्त्रज्ञ होनेपर भी यज्ञसे बहिष्कृत होनेका अपमान सहना पडे यह कोई माननीय बात नहीं हो सकती है। इस तरह संपूर्ण शूद्रजाति तथा

पञ्चम वर्णीय लोगोंको वेदसे दूर ही रखा था। यद्यपि ऐसे इतिहास हम देखते हैं, तथापि वेदमंत्रमें चारों वर्णोंकी उन्नतिकी प्रार्थनाएं हैं, देखिये—

## चारों वर्णोंकी समान उन्नति

**रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु रुचं राजसु नस्कृधि।**
**रुचं विश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम्।**

यजु. १८।४८

'ब्राह्मणोंमें, क्षत्रियोंमें, वैश्यों और शूद्रोंमें तेजस्विता रखो। वह तेज मेरे अन्दर रहे।' इस तरह वेद सर्व मनुष्योंके विषयमें समभाव रखनेको कहता है। तथापि पूर्व-स्थानमें बतायी रीतिसे वेद ब्राह्मणोंने यज्ञमें प्रयुक्त करके सुरक्षित रखे यह सत्य है, पर अन्य जातियोंको वेदोंसे दूर रखा। यह ठीक नहीं हुआ। इसका दुष्परिणाम हम भोग रहे हैं। आज हिंदुओंका प्रेम वेदोंपर नहीं है, इसका कारण यही है।

जिस समय क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र वेदसे दूर रखे गये थे, उस समय ये लोग आचारभ्रष्ट हुए थे, संस्कृत भाषा जाग्रत नहीं रही थी, आर्थिक क्लेशोंके कारण वेदाध्ययनके लिये जितना समय चाहिये, उतना इनके पास नहीं था। ऐसे अनेक कारण इस संबंधमें दिये जा सकते हैं। ऐसे और भी कारण होंगे। पर इससे यह स्पष्ट है कि, हिंदुओं-मेंसे बहुतसे हिंदु वेदसे दूर रहे, इस कारण इस समय वेद सब हिंदुओंकी उदासीनताका विषय हुआ है।

## याज्ञिकोंका ध्येय

याज्ञिकोंका ध्येय बडा उच्च था। यज्ञद्वारा आध्यात्मिक ज्ञान लोगोंको देना यह अत्यंत उच्च ध्येय इन याज्ञिकों-का था। ब्राह्मणग्रंथों और कल्प ग्रंथोंमें अनेक यज्ञोंका वर्णन है और यज्ञ आर्योंका जीवन सुधारनेका कार्य करता था।

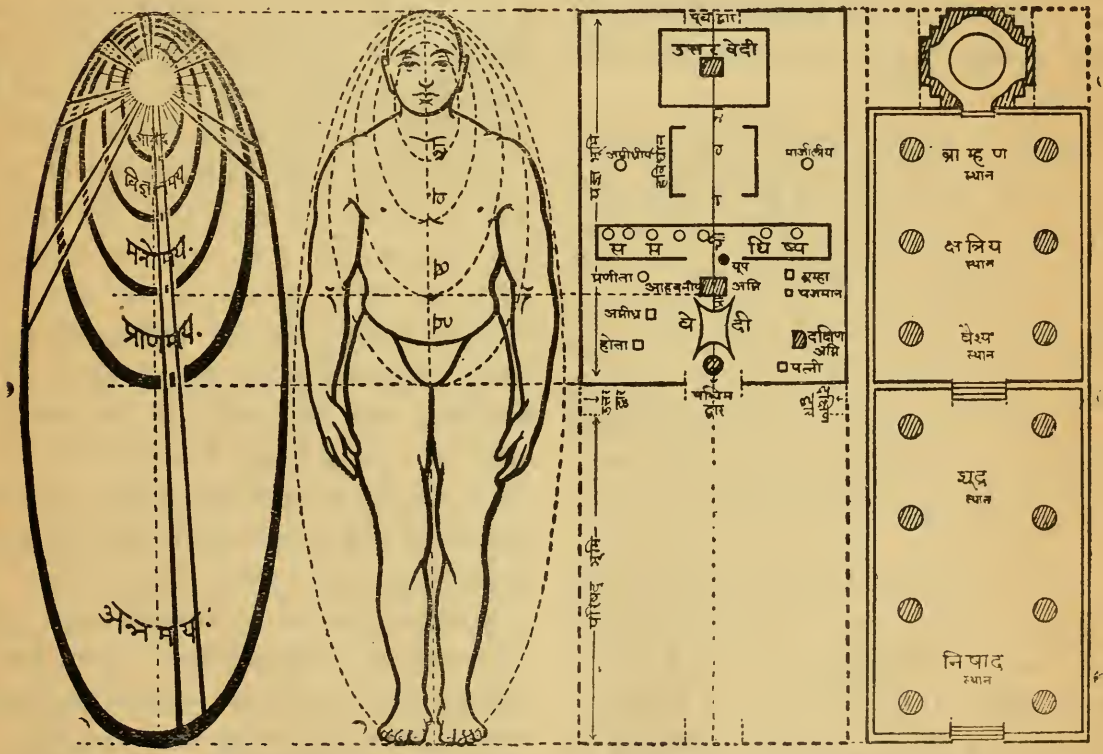


यज्ञशालाका चित्र मानव शरीरपरसे तैयार किया है। शरीरमें जो शक्तियां जहां है और वहां उनका जो संबंध है, वह यज्ञद्वारा बताना उनका उद्देश्य था।

सिरके स्थानपर उत्तरवेदी है, सप्त इंद्रियों (२ आंख, २ कान, २ नाक, १ मुख मिलकर सात इंद्रियों) के प्रति निधि सप्त धिष्ण्य हैं, पेटके स्थानपर आहवनीय आदि

अग्नि है। जिनमें अन्नका हवन होता है। उपस्थेन्द्रियके स्थानमें गार्हपत्याग्नि है, जिसमेंसे पुत्रकी उत्पत्ति होती है। पावोंके स्थानपर सब सदस्य हैं। इस तरह शरीरका ही चित्र यज्ञशाला है। शरीरके अन्दरसे चलनेवाले कार्य यज्ञशालामें यज्ञद्वारा बताये जाते हैं। इस तरह यज्ञद्वारा शरीरके अन्दरकी अध्यात्मशक्तियोंका दर्शन होता है।

वेदका मुख्य विषय अध्यात्मज्ञान देना है, वह इस रीतिसे यज्ञद्वारा सिद्ध होता है। यज्ञ अनेक हैं और इष्टियाँ सैंकडों हैं। मानवी व्यवहारकी सुसिद्धता करनेके लिये इनका उपयोग है। उदाहरणार्थ देखिये, राष्ट्रपर राजाका निर्वाचन करनेके लिये राजसूय यज्ञ है, राष्ट्रको बढानेके लिये अश्वमेध है, सुपुत्र निर्माण करनेके लिये पुत्रकामेष्टि यज्ञ है, पर्जन्य लानेके लिये पर्जन्येष्टी है, मानवोंकी संघटना करनेके लिये नरमेध है, राष्ट्रमें गौओं और बैलोंका संवर्धन करनेके लिये गोमेध है। इस तरह अनेक यज्ञ और अनेक इष्टियाँ मानवोंका संगठन करके मानवोंकी उन्नति करनेके लिये हैं।

यज्ञमेंसे शूद्रोंको दूर रखा जाता था। इसका वर्णन इससे पूर्व किया है। पर 'नरमेध' में सब जातियोंके मानवों का संगठन करना मुख्य उद्देश्य होनेसे सभी जातियोंके मानवोंको यज्ञमण्डपमें लाकर बिठलाया जाता था, और सबका सत्कार किया जाता था। वन्य जातियोंको भी इस यज्ञमें स्थान था और सब जातिके लोग इस यज्ञमंडपमें आकर वेदमंत्र सुनते थे। शूद्रने मंत्र सुने तो उसके कानमें तप्त सीसेका रस डालनेकी क्रिया इस यज्ञमें नहीं हो सकती थी। और हमारे मतसे वैसा होता भी नहीं था। सर्व मानवोंका समभाव यहां प्रकाशित होता था।

इन सब यज्ञोंसे मानवोंकी उन्नति होती थी। जिस तरह राष्ट्रीय महासभा आज भारतमें होती है और उसमें राष्ट्रीय बातों और योजनाओंका विचार होता है, वैसा ही विचार यज्ञोंमें होता था। यज्ञमें सवेरे और शामको हवन होता था और बीचके ४।५ घण्टोंमें व्याख्यान होते थे। इस तरह ये यज्ञ राष्ट्रीय जीवनका सुधार करनेमें समर्थ थे। यद्यपि मन्त्रपाठ करनेमें शूद्रोंका अधिकार नहीं था, तथापि शूद्रोंकी भी उन्नति करनेके सब कार्यक्रम यज्ञोंद्वारा होते थे। सोमयाग ब्राह्मणोंका, अश्वमेध क्षत्रियोंके लिये, वाजपेय वैश्योंके लिये और नरमेध सब मानवोंके कल्याणके लिये होता था। इन यज्ञोंमें वेदमंत्र बोले जाते थे, इस कारण वेदोंकी सुरक्षा होती थी और साथ साथ मानवी कल्याणकी भी आयोजनायें होती थी। इस रीतिसे वैदिक आर्योंका जीवन यज्ञीय जीवन था, और जीवनकी उन्नति करनेके सब पहलु यज्ञोंद्वारा ही सचेत किये जाते थे, प्रतिदिनके यज्ञ, पाक्षिक यज्ञ, मासिक यज्ञ, चातुर्मास्य इष्टियाँ, वार्षिक यज्ञ, ऋतु यज्ञ, विशेष कारणके लिये यज्ञ ऐसे अनेक प्रकारके यज्ञ होते थे, जिनसे आर्योंकी संघटना होती थी और सर्वांगीण उन्नति होती थी, तथा वेदकी सुरक्षा होती थी।

## पौराणिकोंके प्रयत्न

वेदके संरक्षणके लिये जैसे वेदपाठियोंने तथा याज्ञिकों ने प्रयत्न किये, इसी तरह पुराण लेखकोंने भी प्रयत्न किये थे। वेदके अक्षरोंका रक्षण वैदिकों और याज्ञिकोंने किया। और पौराणिकोंने वेदके आशयका रक्षण किया, इतना ही नहीं, परंतु वेदके आशयको ब्राह्मणसे शूद्रतक पहुंचाया।

यज्ञमण्डपमें दो विभाग होते हैं। एक विभागमें हवन आदि यज्ञ क्रियाऐं होती हैं और दूसरे विभागमें जन संमर्द जमा होकर बैठता है और वहां प्रवचन, धर्मचर्चा तथा शास्त्रार्थ होते हैं। यह स्थान हजारों मनुष्य बैठने योग्य होता है और शास्त्रचर्चाकी दृष्टिसे इसका महत्त्व होता है। पुराण गाथा सूत लोग गाते और जनताको कथाओंसे वैदिक धर्मका तत्त्व समझाते हैं। जो वेदमन्त्रोंमें गुह्य रीतिसे कहा रहता है, और जो यज्ञकी क्रियामें ओतप्रोत रहता है, वह तत्त्व तथा राष्ट्रीय उन्नतिके लिये आवश्यक अन्यान्य ज्ञान इस सभामण्डपमें व्याख्यानों द्वारा, कथागानोंके द्वारा तथा प्रवचनोंद्वारा दिया जाता है।

वेदमन्त्रोंका गुह्यज्ञान सब लोग समझ नहीं सकते। इसके लिये उस ज्ञानको रोचक बनाकर कथाके रूपसे समझाया जाता है। 'सत्य बोलना' यह वेदोपदेश है, इसको समझानेके लिये राजा हरिश्चन्द्रकी कथा कहना और सत्य वचन, सत्य व्यवहार और सत्य विचारका महत्त्व सबको सुबोध रीतिसे समझाना पौराणिकोंका कार्य था। राष्ट्र उन्नति करनेमें इस कार्यका बडा भारी महत्त्व है। वेद गुह्य ज्ञान

कहते हैं तो थोडे पंडित इस विज्ञानको जान सकते हैं। इसी गुप्तज्ञानको कथाद्वारा समझानेसे सब लोग समझ सकते हैं। इस कारण यज्ञके मण्डपके एक विभागमें पुराण-कथा श्रवण तथा शास्त्रचर्चा होती थी। इस मण्डपमें शिल्पके प्रदर्शन, हस्तलाघवके प्रयोग, और चित्तके आकर्षण करनेवाले प्रसंग होते थे। जो सबके सब बोधप्रद और उपदेश करनेवाले होते थे।

"इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।"

इतिहासों और पुराण कथाओंसे वेदके उपदेशको समझाना चाहिये ऐसा जो कहा है वह सत्य है।

इतिहास दो हैं, रामायण और महाभारत। पुराणें १८ हैं और उपपुराणें १८ हैं। ये पुराणोंके सब ग्रंथ मिलकर करीब चालीस लाख श्लोक हैं। इतना यह सब ग्रंथ विस्तार वस्तुतः वेदोंके सिद्धान्त जनतातक पहुंचानेके लिये था, परंतु लेखकोंने अपने अपने विचार बीच बीचमें घुसेड दिये और पुराणोंको बहुत ही बढा दिया है। इस कारण पुराणोंमें वैदिक और अवैदिक दोनों विचार इस समय दिखाई देते हैं। अतः आज इन इतिहास और पुराणोंसे वेदके सिद्धान्त प्रतिपादित हो रहे हैं ऐसा कहना अशक्य है। परंतु प्रारंभमें पुराण इसी कार्यके लिये थे।

इतिहास और पुराणोंसे वेदका आशय स्पष्ट करना चाहिये ऐसा स्मृति और शास्त्रोंका कथन है। वे इतिहास और वे पुराण अतिप्राचीन समयमें छोटे थे और पश्चात् वे पन्थाभिमानियोंने बढाये। इस कारण प्रक्षिप्त भाग पुराणोंमें बहुत है।

यद्यपि ऐसा है तथापि हम आज भी वेदकी व्याख्या करनेवाला भाग पुराणों और इतिहासोंमें कितना और कहां है इसका निर्णय कर सकते हैं। श्रीमद्भागवतादि पुराणोंमें वैदिक सूक्तोंके सूक्त अनुवाद करके दिये हैं। इसी तरह वैदिक मंत्रोंमें आये थोडेसे मूलसे बडी विस्तृत कथा पुराणोंमें दीखती है। इन्द्र-वृत्र युद्ध, अश्विनी कुमार, च्यवन, आदि कथाएं इसके उदाहरण रूपमें दी जा सकती है। अतः इनका मनन करके आज भी हम वेदमन्त्र और पुराणकी गाथाओंका परस्पर संबंध क्या है यह देख सकते हैं। यह विषय अत्यंत आवश्यक है और इसके ग्रंथ प्रकाशित होने चाहिये। यह विषय महत्त्वका है, अत्यावश्यक है, पर ४।५ पण्डित इसीपर १०।२० वर्ष लगेंगे और इसपर पर्याप्त व्यय होगा, तब ये तुलनात्मक ग्रंथ लोगोंको मिल सकेंगे और इनसे जान सकेंगे कि कौनसे वेद भागसे कौनसे पुराणके भागका कैसा संबंध है।

वेदमें भी इतिहास पुराण हैं जैसा—

इतिहासश्च पुराणं च गाथाश्च नाराशंसी-श्चानुव्यचलन् ॥ ११॥ इतिहासस्य च वै स पुराणस्य च गाथानां च नाराशंसीनां च प्रियं धाम भवति य एवं वेद ॥ १२॥

अथर्व. १५।६ ११-१२

ऋचः सामानि छंदांसि पुराणं यजुषा सह। उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रिताः ॥२४॥

अथर्व. ११।९ (७)।२४

यत आसीद् भूमिः पूर्वा या मद्धातय इद् विदुः। यो वै तां विद्यान्नामथा स मन्येत पुराणवित् ॥७॥

अथर्व. ११।१० (८)।७

"उसके पीछे इतिहास, पुराण, गाथा और नाराशंसी ये सब चले। इतिहासका, पुराणका, गाथाओंका और नाराशंसियोंका वह प्रिय धाम हो जाता है जो यह जानता है॥ (११-१२) ऋचाएँ साम, छन्द (अथर्व), यजुके साथ पुराण यह सब साहित्य उच्छिष्ट परमेश्वरसे बना है॥ (२४) पूर्व समयमें भूमि कैसी थी, यह ज्ञानी लोग जानते हैं, इसको (नाम था) नामके साथ जो जानता है उसको पुराण जाननेवाला कहा जाता है॥ (७)

इस तरह पुराणों, इतिहासों, गाथाओं और नाराशंसी अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषोंकी प्रशंसाके विषयमें वेदमें वचन हैं। यहां वेदमें इतिहास या पुराण है, ऐसा सुनने मात्रसे पाठकोंको चमकना नहीं चाहिये। यह इतिहास और पुराण आदिकी कल्पना ही पृथक् है।

## इतिहास

युरोपीयन लोग विशेषतः ग्रीक लोग मानवोंका इतिहास विश्वसनीय रीतिसे लिखनेमें सुप्रसिद्ध है। आज ये मानवोंके इतिहास जगत्में सबोंके सामने हैं। भारतके ऋषिमुनि मानवी शरीरोंके हलचलको इतिहास नहीं कहते।

शरीरकी हलचल मानसिक विचारोंसे होती है। इसलिये मानसिक विचारों और भावोंका आन्दोलन कैसा होता है, यह देखकर हमारे ऋषिमुनि इतिहास या पुराण लिखते थे। इसलिये इसको शाश्वत इतिहास कहते हैं। यह शाश्वत इतिहास वेदमें हैं और इतिहास पुराणोंमें भी है।

इसीलिये "दशरथ × दशमुख" "धर्म × दुःशासन" ऐसे गुणबोधक नाम लिखे हैं। वास्तवमें लंकाके राजाका नाम 'रावण' (रोनेवाला) किस तरह होगा और भारतीय सम्राट् 'दुःशासन' (दुष्ट रीतिसे राज्य चलानेवाला) यह कैसा कौन बोल सकता है। वस्तुतः ये इतिहास मानवोंके ही हैं, पर ऐसे ढंगसे लिखे गये हैं कि जिससे उनकी मनोभूमिका पता पाठकोंको लगे और किस मनोविकारकी प्रबलता कहां होनेके कारण कौनसा युद्ध कहां हुआ। इस लिये ये इतिहास इस भूमिपर होनेपर भी ये सनातन और शाश्वत इतिहास हैं। और यूरोपके इतिहासोंके समान मानवोंके अशाश्वत इतिहास नहीं है। यह इतिहास पुराणकी भारतीय कल्पना समझना उचित है।

'पुराण' का अर्थ ही 'पुरा अपि नवं' प्राचीन समयमें हो जानेपर भी नवीन जैसा है। इसीलिये यह शाश्वत है। दुर्योधन, दुःशासन, दुर्मद, दुःशील ये धृतराष्ट्र पुत्रोंके नाम हैं। ये नाम ऐसे ही बुरे अर्थवाले धृतराष्ट्रने किस तरह रखे होंगे! कोई पिता अपने पुत्रोंके नाम इस रीतिसे दुष्ट भाववाले नहीं रखता। इसलिये हम कहते हैं कि ये कविके रखे नाम हैं। और मनोभाव बतानेके लिये यह रचना कविने की है। इस कारण यह इतिहास शाश्वत है।

पाठक हमारे भारतीय ऋषिमुनिरचित इतिहास-पुराणोंको इस शाश्वत दृष्टिसे समझनेका यत्न करें। तो उनमें इन्ही शब्दोंसे नवीन शाश्वतभाव प्रकट होगा और कोई किसी तरह भ्रम नहीं होगा। इतिहास पुराणका शाश्वत भाव ध्यानमें न आनेसे बडे विवाद व्यर्थ ही खडे हो गये हैं। वास्तवमें उनका कोई प्रयोजन नहीं है।

इन इतिहास पुराणों गाथाओं और नाराशंसीयोंमें जितना शाश्वत भाव है, उससे वेदका तथा वैदिक ज्ञानका संरक्षण हुआ है। इसलिये ये भाग वेदकी सुरक्षा करनेवाले हैं।

## आरण्यक

वेदमें अध्यात्मज्ञान है। अनेक रीतियोंसे यह ज्ञान वेदमें वर्णन किया है। इसका प्रकाश करनेके लिये आरण्यक और उपनिषद बने हैं। वस्तुतः ब्राह्मण ग्रंथ यज्ञविधिका वर्णन करनेके लिये हैं, तथापि उनमें भी बीच बीचमें अध्यात्मका दर्शन कराया गया है। मूलतः यज्ञविधि भी अध्यात्मदर्शनके लिये ही है, तथापि उसका उद्देश्य राजकीय तथा सामाजिक अभ्युत्थान भी है। परंतु आरण्यकों और उपनिषदोंका उद्देश्य केवल अध्यात्मदर्शन ही है। वेदमें आत्मा बुद्धि मन इंद्रियाँ आदि शक्तियोंका जो वर्णन है वह प्रकट करके जिज्ञासुओंको बताना इनका कार्य है।

उपनिषदोंमें—

तत् एतत् ऋचा अभ्युक्तम्। छां. ३।१२।५
बृ. ४।४।२३; मुण्ड. ३।२।१०; प्रश्न १।७

तत्रैते द्वे ऋचे भवतः। छां ३।१७।६

तत् एतत् श्लोकेन अभ्युक्तम्। कौ. १।६

तत् एष श्लोकः। छां. २।२१।३; ३।११।१; ५।२।९; ५।१०।८ इ०। प्रश्न १।१०; ३।१० इ०

इति श्लोकाः। बृ० १।५।१

अथ एष श्लोको भवति। बृ० १।५।२३

तत् एष श्लोको भवति। बृ० २।२।३; ४।४।६।७

तत् एते श्लोका भवन्ति। बृ० ४।३।११

तत् अपि एष श्लोको भवति। तै. २।१।१

इस तरह अनेक स्थानोंपर अध्यात्मका प्रतिपादन करके उसकी पुष्टिके लिये वेद वचन दिये हैं। अर्थात् उस मंत्रके अध्यात्मज्ञानका वह विवरण है ऐसा समझना उचित है। इनमेंसे कई श्लोक या मंत्र आजकी उपलब्ध संहिताओंमें नहीं मिलते, उनका स्थान शाखा संहिताओंमें है। इसका तात्पर्य यह है कि वेद मंत्रोंमें कहीं आत्मविद्याका प्रतिपादन आरण्यक और उपनिषद करते हैं। अर्थात् आरण्यक और उपनिषद वेदविद्याकी सुरक्षा करनेके लिये हैं। जितनी शाखाएँ हैं उतने उपनिषद हैं। आजकल इनकी संख्या थोडी है तो भी जो आरण्यक और उपनिषद हैं उनसे इस बातका स्पष्ट पता लगता है कि, वे नूतन विद्या बताते नहीं है, परन्तु जो विद्या वेदमंत्रोंमें है उसको प्रकटकर रहे हैं। इस विषयमें कहा है—

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्
यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः
यस्तन्न वेद किं ऋचा करिष्यति
य इत् तद्विदुः त इमे समासते ।

ऋ. १।१६४।३९; अथर्व ९।१०।१८ तै. ब्रा. ३।१०।९। १४; तै. आ. २।११।१ नि. १३।१०

'ऋचाओंके-मन्त्रोंके अक्षरोंमें सब देव बैठे हैं। इस रहस्यको जो नहीं जानता है, वह मंत्र लेकर क्या करेगा पर जो इस ज्ञानको जानता है वह श्रेष्ठ होकर बैठता है।' यह रहस्य ज्ञान वेदमंत्रोंमें कैसा है, वह संक्षेपसे आरण्यकों और उपनिषदोंमें बताया है।

## व्याकरण, छन्द आदि

वेदोंके संरक्षण करनेके लिये व्याकरण शास्त्र बनाया। शुद्ध पाठ कौनसा है, अशुद्ध पाठ कौनसा और क्यों है, इसका ज्ञान व्याकरणसे होता है। व्याकरणमें स्वर प्रकरण है। उदात्त अनुदात्त आदि स्वरोंसे अर्थज्ञान ठीक होता है। यह सब व्याकरणके अन्तर्गत विषय है। गर्ग, शाकटायन, आदि अनेक व्याकरणकर्ता हुए हैं। इनमें अन्तिम व्याकरण पाणिनी मुनिका अष्टाध्यायी नामक है। कात्यायनने वार्तिक बनाकर उसमें जो अपूर्णता थी वह दूर की है। पश्चात् इस-पर पतञ्जलिका महाभाष्य है। पाणिनी-कात्यायन-पतञ्जलि इन तीन मुनियोंके ग्रंथोंसे संस्कृत व्याकरण पूर्ण होता है। लौकिक और वैदिक भाषाका संपूर्ण व्याकरण यह है। जगत्में किसी भी भाषाका इतना उत्तम व्याकरण किसीने बनाया नहीं है जितना यह संस्कृत भाषाका व्याकरण बनाया गया है। इसमें लौकिक संस्कृत भाषाके रूप सिद्ध किये हैं वैसे ही वैदिक भाषाके भी सिद्ध किये हैं। वेदकी सुरक्षाके लिये इस व्याकरणकी अत्यंत आवश्यकता है।

छन्दः शास्त्रकी इसलिये आवश्यकता है कि कौनसे मंत्रका कौनसा छन्द है इसका पता लगे और उस मन्त्रके चरण कितने अक्षरोंके और कितने होते हैं, इसका ज्ञान हो। कई मंत्र दो चरणोंवाले, कई मंत्र तीन चरणोंवाले कई चार चरणोंवाले, इसी तरह कई मन्त्र अधिक चरणों-वाले होते हैं।

गायत्रीके ३ चरण, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहतीके ४ चरण, पंक्तिके ५ चरण, चार चरणोंकी भी पंक्ति होती है, त्रिष्टुप् तथा जगतीके चार चरण, प्रगाथमें दो मंत्र, अतिजगती ५ चरण, शक्करी अष्टि, धृतिके ७ चरण, अतिधृतिके ८ चरण ऐसे चरणोंमें फरक है। गायत्रीके २४, उष्णिक्के २८, अनु-ष्टुप्के ३२, बृहतीके ३६, पंक्तिके ४०, त्रिष्टुप्के ४४, जगतीके ४८, प्रगाथके ६८, ७६, ८०; अतिजगतीके ५२, शक्करीके ५६, अतिशक्करीके ६०, अष्टिके ६४, अत्यष्टिके ६८, धृतिके ७२, अतिधृतिके ७६, कृतिके ८०, प्रकृतिके ८४, आकृतिके ८८, विकृतिके ९२, संकृतिके ९६, अभिकृतिके, १०० तथा उत्कृतिके १०४ अक्षर होते हैं। यह तो सर्व साधारण गणना है। इनमें भी विशेष भेद होते हैं। ऊपर गायत्रीके तीन पाद और २४ अक्षर होते हैं ऐसा सर्व साधारण नियम कहा है, पर इनमें ११ भेद हैं देखिये—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गायत्री | हसीयसी | १९ | अक्षर | ६×६×७ अक्षरोंवाले | ३ पाद |
| ,, | विपरीता | ,, | ,, | ७×६×६ ,, | ,, |
| ,, | अतिनिचृत् | २० | ,, | ७×६×७ ,, | ,, |
| ,, | पाद | २१ | ,, | ७×७×७ ,, | ,, |
| ,, | वर्धमाना | ,, | ,, | ६×७×८ ,, | ,, |
| ,, | प्रतिष्ठा | ,, | ,, | ८×७×६ ,, | ,, |
| ,, | | २४ | ,, | ८×८×८ ,, | ,, |
| ,, | उष्णिग्गर्भा | ,, | ,, | ६×७×११ ,, | ,, |
| ,, | यवमध्या | ,, | ,, | ७×१०×७ ,, | ,, |
| ,, | पद पंक्तिः | २५ | ,, | ५×५×५×४×६ ,, | ५ पाद |
| ,, | ,, | २६ | ,, | ५×५×५×५×६ ,, | ,, ,, |

इस तरह अन्य छन्दोंके भी अनेक भेद होते हैं। इतना सूक्ष्म विचार छन्दशास्त्रने किया है। इस कारण वेद मंत्रमें किस मंत्रके कितने पाद और प्रत्येक पादमें कितने अक्षर होते हैं यह निश्चित हुआ है। एक अक्षर भी इस कारण इधर उधर नहीं हो सकता। प्रत्येक मंत्रके अक्षर गिने गये हैं, इतना ही नहीं परंतु प्रत्येक पादके भी अक्षर गिने हैं। इतनी वेदकी सुरक्षा करनेके लिये ऋषियोंने बडा भारी प्रयत्न किया है। वह देखनेसे आश्चर्य प्रतीत होता है। हमने छन्दका ज्ञान देनेवाला लेख पृथक् मुद्रित किया है और हमारे मुद्रित ऋग्वेद आदि वेदोंमें ये चरण इस शास्त्रके अनुसार बताये हैं।

स्वरबोधके लिये स्वतंत्र पुस्तिका लिखी है जिसको देख-नेसे स्वरोंका भी ज्ञान हो सकता है। इन सबकी सूक्ष्मता

बहुत है। परंतु इन निबंधोंमें अत्यावश्यक ज्ञान दिया गया है। इसलिये पाठक ये निबंध अवश्य पढें और वेदकी सुरक्षा करनेके लिये प्राचीन ऋषि मुनियोंने कितने प्रयत्न किये थे। इसका ज्ञान प्राप्त करें। हमारे पूर्वजोंने इतना प्रयत्न किया था, यह देखकर हमें भी वेद संरक्षणके लिये कुछ यत्न करनेकी स्फूर्ति होनी चाहिये।

## ज्योतिष

ज्योतिष शास्त्र खगोल विद्याका शास्त्र है। इसमें सूर्यादि गोलकोंकी गतिके गणित रहते हैं। वेदमें कई मंत्रोंमें ज्योतिष विषयक उल्लेख आते हैं। उनका अर्थ इस ज्योतिष शास्त्रसे विदित होता है। इसलिये वेद संरक्षणमें ज्योतिष शास्त्रकी आवश्यकता है। जो इस ज्योतिषको नहीं जानता वह ज्योतिष विषयक मंत्रोंका अर्थ केवल शब्दज्ञानसे ही नहीं जान सकता। और यदि ज्योतिष शास्त्रकी सहायता न लेते हुए वह उन मंत्रोंका अर्थ करेगा, तो वह अर्थ गलत होगा। इसलिये वेदानुसंधान करनेवालोंको इस ज्योतिष शास्त्रके अध्ययन करनेकी अत्यंत आवश्यकता है। इस ज्योतिष शास्त्रने कई वेदमंत्रोंका अर्थ निश्चित किया है और इस कारण वेदोंकी सुरक्षा हुई है।

## निघण्टु और निरुक्त

वैदिक पदोंका कोश निघण्टु है और वैदिक पदोंका अर्थ, गुह्यार्थ किस रीतिसे जानना यह निरुक्तमें कहा है। उदाहरणार्थ कुछ पदोंका नैरुक्त अर्थ देखिये। इसके देखनेसे पता लगेगा कि निरुक्तका कितना उपयोग है—

अग्निः कस्मात्। अग्रणीर्भवति। निरु०

'अग्नि किससे बनता है। अग्नि अग्रणी होता है।' अर्थात् पहिले 'अग्रणी' था उसका संक्षिप्त नाम अग्नि बना। यह कैसा बना देखिये—

अग्रणी=अग्रनीः=अग्निः=अग्नि

अग्रणीका अर्थ अग्रतक ले जाता है। (अग्रं नयति, अग्रे नयति वा) नेता अग्रणी कहलाता है, इसका कारण यह है कि वह अपने अनुयायियोंको सिद्धितक पहुंचा देता है। बीचमें ही नहीं छोडता। यह अग्नि पदका रहस्यार्थ है। इस तरह कई पदोंकी व्युत्पत्तियां निरुक्तमें बतायी हैं जिनको देखनेसे वेदमंत्रके पदोंके रहस्यार्थमें मनुष्य प्रगति कर सकता है। निघण्टुमें पद दिये हैं और पदोंके गणोंका अर्थ दिया है और निरुक्तमें पदोंका गूढार्थ खोजनेकी कूंजी बतायी है। वेदका अर्थदृष्टिसे संरक्षण इन दोनों शास्त्रोंने किया है।

निरुक्तमें जो अर्थ किये हैं, उनके सूचक मंत्र भाग वेदमें हैं। उनकी खोज करके निरुक्तका संपादन करना चाहिये और उन मंत्र भागोंको यथास्थान देकर यह निरुक्तका निर्वचन इस मंत्रके आधारसे किया गया है यह बताना चाहिये। निरुक्तका ऐसा संस्करण प्रकाशित होनेकी अत्यंत आवश्यकता है।

प्राचीन समयके ऋषि मुनि, वेद मूर्ति, पण्डित आदियोंने वेदका संरक्षण करनेके लिये इतने यत्न किये थे। इसके साथ अष्ट विकृति भी उन्होंने बनायी थी। इसका संक्षिप्त परिचय यहां कराते हैं—

१ मन्त्र पाठः

ओषधयः संवदन्ते सोमेन सह राज्ञा

ऋ० १०।९७।२२

२ पद पाठः

ओषधयः। सं। वदन्ते। सोमेन। सह। राज्ञा।

३ क्रमपाठः

ओषधयः। सं। सं वदन्ते। वदन्ते सोमेन। सोमेन सह। सह राज्ञा। राज्ञेति राज्ञा॥

४ पञ्चसन्धि

ओषधयः सं। सं सं। समोषधयः। ओषधय ओषधयः। ओषधयः सं॥ सं वदन्ते। वदन्ते वदन्ते। वदन्ते सं। सं सं। सं वदन्ते॥ वदन्ते सोमेन। सोमेन सोमेन। सोमेन वदन्ते। वदन्ते वदन्ते। वदन्ते सोमेन॥ सोमेन सह। सह सह। सह सोमेन। सोमेन सोमेन। सोमेन सह॥ सह राज्ञा॥ राज्ञा राज्ञा। राज्ञा सह। सह सह। सह राज्ञा। राज्ञेति राज्ञा॥

५ जटापाठः

ओषधयः सं, समोषधयः, ओषधयः सं॥ सं वदन्ते, वदन्ते सं, सं वदन्ते॥ वदन्ते सोमेन,

सोमेन वदन्ते, वदन्ते सोमेन ॥ सोमेन सह, सह सोमेन, सोमेन सह ॥ सह राज्ञा, राज्ञा सह, सह राज्ञा ॥ राज्ञेति राज्ञा ॥

६ माला पाठः

ओषधयः सं । राज्ञेति राज्ञा ॥ संवदन्ते राज्ञा सह ॥ वदन्ते सोमेन । सह सोमेन ॥ सोमेन सह । सोमेन वदन्ते । सह राज्ञा । वदन्ते सं । राज्ञेति राज्ञा । समोषधयः ॥

इस तरह वेदके प्रत्येक पदको यथास्थान सुरक्षित रखनेके लिये ऋषिमुनियोंने ये पदोंकी कृति और विकृतियां बनायीं थी । आज भी भारतमें ये विकृतियां विनाप्रमाद बोलनेवाले पंडित हैं । पर इनकी संख्या दिन प्रतिदिन कम हो रही है । ये विकृतियां इतनी ही हैं ऐसा कोई न समझे । इससे दुगुणी तो हैं । यहां केवल नमूनेके लिये ५।६ दी हैं । ये पद तथा क्रम ध्यानमें रखना कितना कठिन है इसकी कल्पना पाठकोंको इन विकृतियोंको देखनेसे हो सकती है ।

पचास वर्षोंके पूर्व काशीमें इस तरह वेदपाठ करने वालोंकी संख्या हजार बारह सो थी, वहां अब दोसौ भी नहीं है । भविष्यमें इनकी संख्या नहीं रहेगी, ऐसे लक्षण दीख रहे हैं । आजतक इन ग्रंथोंने तथा इन वैदिकोंने वेदोंकी सुरक्षा की, आजतक इनकी आजीविका वेद विद्याके अध्ययनसे चलती थी । आज इनको कोई पूछता नहीं, इसलिये आर्थिक कठिनताके कारण इनकी संख्या न्यून हो रही है ।

## अब हमें क्या करना चाहिये ?

वेदको सुरक्षित रखनेके लिये अब हमें क्या करना चाहिये इसका विचार इस समय हमें करना चाहिये ।

१ चारों वेदोंकी मुद्राएं ( ब्लाक ) अतिशुद्ध रीतिसे तैयार करनी चाहिये । एक भी अशुद्धि न रहे ऐसी व्यवस्था करके ये ब्लाक बनाये जांय । उत्तम तांबेके पत्रेपर ये ब्लाक बनाये जांय, तो इनसे लाख दो लाख प्रतियां अच्छी तरह छापी जा सकती हैं । अर्थात् ऐसा करनेसे वेदमुद्रणमें कुछ भी दोष होनेकी संभावना नहीं रहेगी ।

२ दूसरी महत्त्वकी बात यह है कि चारों वेदोंके ध्वनिमुद्राएं बनाना । इससे वेदपाठ किस तरह करते हैं इनका ज्ञान सबको होगा ।

३ इसके पश्चात् मूल वेद, पदपाठ तथा अन्वयपाठ सहित शुद्ध छापना । यह नित्यपाठके लिये अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा । विश्वविद्यालयोंमें भी इससे अच्छी पढाई हो सकेगी । आजकी वेद पढाईकी कठिनता इससे दूर होगी ।

४ अनुवाद समेत वेदोंका मुद्रण करना । ऊपर मंत्र, बीचमें अन्वय और नीचे अर्थ इस तरह ये पुस्तक चारों वेदोंके होने चाहिये । सर्व साधारण जनतातक ये ग्रंथ पहुंच सकते हैं । यदि वेदोंको सर्व साधारण घरतक पहुंचाना है, तब तो ऐसा मुद्रण करना अत्यंत आवश्यक है । ये अनुवाद हिंदी, गुजराती, मराठी, अंग्रेजीमें छपने चाहिये ।

५ इसके पश्चात् वेदमंत्र अथवा वेदवचन विषयवार छांटकर उनके संग्रह अर्थ और स्पष्टीकरणके साथ प्रकाशित होने चाहिये । वैयक्तिक जीवन, सामाजिक जीवन, राष्ट्रीय जीवन आदिके सभी विषयोंके संबंधमें जितने जहां वचन चारों वेदोंमें होंगे, वे सबके सब इस संग्रह ग्रंथमें मिलने चाहिये । एक भी वचन छूटना नहीं चाहिये । इस ग्रंथसे वेद धर्मके स्वरूपका ज्ञान यथार्थ रीतिसे हो सकेगा ।

आजका जो वेदमंत्र संग्रह है वह विषयवार संग्रह नहीं है । प्राचीन समयमें मनुष्यके पास समय बहुत था, वैसा समय इस समय नहीं है । इसलिये जबतक एक एक विषयके मंत्र प्रकरणशः संग्रहित न किये जांयगे, तबतक वेदका धर्म प्रत्येक घरतक पहुंचनेकी कोई संभावना नहीं है । यह सब कार्य निष्पक्ष विद्वान ८।१० वर्षोंमें कर सकते हैं । और इस कार्यके लिये दस लाख रु. का एक 'वेदनिधि' बनना चाहिये । जिस निधिसे यह कार्य होता रहेगा ।

इतना बननेके पश्चात् वेदकी पढाई-अध्ययन और अध्यापन-अच्छी तरह हो सकेगा और कोई कठिनता इसमें नहीं रहेगी । आज वेद पढाई न होनेका कारण यह है कि ये साधन ग्रंथ बने नहीं हैं । जब ये ग्रंथ बनेंगे, तब कोई कठिनता रहनेका संभव ही नहीं है ।

जो वेदके प्रेमी हैं, वे इसका विचार करें और इस भारको उठावें । धनराशी बनेगी, तो बाकीका कार्य करनेवाले सुयोग्य पण्डित हमारे पास हैं और हम बाकीका ऊपर लिखा सब कार्य नियत समयमें करके देंगे ।

# प्र श्न

१ वेदका महत्व दर्शानेवाले मनुस्मृतिके वचन लिखो ।
२ वेदके मंत्र कितने हैं ?
३ वेद पाठ करनेसे क्या लाभ होनेकी संभावना है ?
४ सामवेदके स्वर और ऋग्वेदके स्वर कैसे हैं ?
५ सामगान किसका करना चाहिये ?
६ किसी एक मंत्रका पद और अन्वय लिखो ।
७ नित्य पाठके लिये वेद कैसे छपने चाहिये ?
८ वेद सुबोध है वा दुर्बोध ? वेदकी भाषा सरल है वा जटिल है ?
९ वेदके कौनसे मंत्र कठिन हैं ? सरल अर्थवाले मंत्र कितने हैं और कठिन मंत्र कितने हैं ।
१० वैदिकोंने वेदका संरक्षण कैसा किया ?
११ इससे क्या बना ?
१२ अब्राह्मणोंके अन्दर वेदका आदर क्यों नहीं ?
१३ वेद संरक्षणकी व्यवस्था अब किस तरह करनी चाहिये ।
१४ कौनसी संस्था वेदोंको पूर्णतया मानती है ?
१५ याज्ञिकोंने किस रीतिसे वेदका रक्षण किया ?
१६ कवष ऐलूषकी कथा कौनसा बोध देती है ?
१७ अध्यात्मकी शक्तियोंके आधारपर यज्ञकी रचना किस तरह हुई ?
१८ वेदके संरक्षणके लिये पौराणिकोंके प्रयत्न किस तरह हुए थे ? पौराणिकोंने वेदके संरक्षणार्थ क्या किया ?
१९ इतिहास और पुराणोंसे वेदके अर्थका स्पष्टीकरण कैसा होता है ?
२० ऋषियोंकी इतिहासकी कल्पना क्या थी ? शाश्वत इतिहासका अर्थ क्या है ?
२१ आरण्यकका स्वरूप क्या है ?
२२ व्याकरण छन्द आदिने क्या किया ?
२३ वेदमंत्रकी विकृतियां कैसी होती हैं ?
२४ अब हमें क्या करना चाहिये ?